जीती, फ्रांसीसी उदारवादियों ने एक संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की, और कुछ क्रांतियों के सफल परिणाम हुए।

- **जर्मनी :** सात वर्षों में तीन युद्ध - ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और फ्रांस के साथ - प्रशिया की जीत में समाप्त हुए और एकीकरण की प्रक्रिया को पूरा किया।
- **इटली :** 1848 के विद्रोहों के बाद, इटली के सार्डिनिया राज्य के प्रधान मंत्री कैवोर द्वारा इटली के एकीकरण के प्रयास किए गए। उनकी नीति बिस्मार्क के समान थी। (1) 1859 में, सार्डिनिया ने ऑस्ट्रिया के खिलाफ युद्ध में फ्रांस के साथ गठबंधन किया, जिसने इटली के कई राज्यों को ऑस्ट्रियाई शासन से मुक्त कर दिया और उनमें से अधिकांश सार्डिनिया के सम्राट के अधीन एकजुट हो गए। (2) आखिरकार, सिसिली, नेपल्स, वेनिस और रोम को एक के बाद एक जोड़ा गया, इस प्रकार एकीकरण को पूरा किया गया।

लोकतंत्र से दूर जा रहा राष्ट्रवाद:

- उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही तक राष्ट्रवाद ने सदी के पूर्वार्ध की अपनी आदर्शवादी उदार-लोकतांत्रिक भावना को बरकरार नहीं रखा, बल्कि सीमित लक्ष्यों के साथ एक संकीर्ण पंथ बन गया।
- इस अवधि के दौरान राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के प्रति असहिष्णु हो गए और युद्ध में जाने के लिए हमेशा तैयार रहे।
- बदले में, प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने अपने साम्राज्यवादी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए यूरोप में विषय लोगों की राष्ट्रवादी आकांक्षाओं में हेरफेर किया। 1871 के बाद यूरोप में राष्ट्रवादी तनाव का सबसे गंभीर स्रोत *बाल्कन* नामक क्षेत्र था।
- राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद के साथ गठबंधन करके, 1914 में यूरोप को आपदा की ओर ले गया। लेकिन इस बीच, दुनिया के कई देश जो उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपीय शक्तियों द्वारा उपनिवेश बनाए गए थे, शाही वर्चस्व का विरोध करने लगे।
- साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन जो हर जगह विकसित हुए, वे राष्ट्रवादी थे, इस अर्थ में कि वे सभी स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, और सामूहिक राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित थे, जो साम्राज्यवाद के साथ टकराव में गढ़ा गया था।
- राष्ट्रवाद के यूरोपीय विचारों को कहीं भी दोहराया नहीं गया था, क्योंकि हर जगह लोगों ने राष्ट्रवाद की अपनी विशिष्ट विविधता विकसित की थी।
- लेकिन यह विचार कि समाजों को 'राष्ट्र-राज्यों' में संगठित किया जाना चाहिए, प्राकृतिक और सार्वभौमिक के रूप में स्वीकार किया गया।

  राष्ट्रवाद, जो बल के प्रयोग के रूप में प्रकट हुआ, ने भले ही इन राष्ट्रों को एकजुट करने में मदद की हो, लेकिन यह बाद के दशकों में यूरोपीय देशों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता का कारण भी था, जिसके कारण प्रथम विश्व युद्ध हुआ। अफ्रीका के लिए हाथापाई और 1848 की क्रांति के बाद शुरू हुआ नया साम्राज्यवाद प्रथम विश्व युद्ध का अग्रदूत बन गया।

18. रंगभेद शासन उपनिवेशवाद के सबसे अभद्र चेहरे में से एक था, "रंगभेद विरोधी आंदोलन" के संदर्भ में चर्चा करें। रंगभेद विरोधी आंदोलन में भारत का क्या योगदान था?

इस प्रणालीगत नस्लवाद के जवाब में, इंग्लैंड में रहने वाले निर्वासित दक्षिण अफ्रीकी लोगों के एक समूह ने देश से उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान किया। दक्षिण अफ्रीका में पुलिस द्वारा निहत्थे प्रदर्शनकारियों के मारे जाने की खबर के बाद आंदोलन ने लोकप्रियता हासिल की और बढ़ गया। इसके सदस्य संसद की पैरवी करने लगे और आर्थिक प्रतिबंधों पर जोर देने लगे।

रंगभेद विरोधी आंदोलन की ओर वैश्विक ध्यान गया, दक्षिण अफ्रीका को राष्ट्रमंडल से हटा दिया गया। ब्रिटिश शिक्षाविदों ने अलगाव का अभ्यास करने वाले दक्षिण अफ्रीकी विश्वविद्यालयों में काम करने से इनकार करने पर एक साथ प्रतिबंध लगा दिया। 1994 में, अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस राजनीतिक दल ने चुनाव जीता और रंगभेद को समाप्त करना शुरू किया।

पार्श्वभूमि:

प्रधान मंत्री मालन ने रंगभेद की शुरुआत की (1948-54)

- रंगभेद का शाब्दिक अर्थ है 'अलगाव'। अश्वेतों के साथ भेदभाव 1948 से पहले भी होता था लेकिन उसके बाद इसे कानूनों के माध्यम से संस्थागत रूप दे दिया गया।

रंगभेद की विशेषताएं

- पृथक्करण
- नस्लीय पहचान पत्र और पास कानून